Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Review Paper

संस्कृत भाषा की संरचनात्मक विशेषताएँ: एक भाषावैज्ञानिक अध्ययन

डॉ रुचिका जैन *

सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, दिगंबर जैन कॉलेज बड़ौत, बागपत,उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * डॉ रुचिका जैन

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18682532

सारांश

संस्कृत भाषा विश्व की उन विरल भाषाओं में से एक है जिसकी संरचना अत्यंत सुव्यवस्थित, नियमबद्ध और वैज्ञानिक मानी जाती है। इस शोधपत्र में संस्कृत भाषा की संरचनात्मक विशेषताओं का विस्तृत भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिसमें ध्वनिविज्ञान, रूपविज्ञान, वाक्यविन्यास तथा अर्थविज्ञान के स्तरों पर गहन विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि संस्कृत की ध्वन्यात्मक शुद्धता, रूपात्मक समृद्धि, विभक्ति-प्रधान वाक्य संरचना तथा अर्थनिर्धारण की सूक्ष्म प्रणाली इसे एक आदर्श भाषिक मॉडल बनाती है। यह शोध यह भी दर्शाता है कि संस्कृत भाषा की संरचना आधुनिक भाषाविज्ञान, संगणकीय भाषाविज्ञान तथा भारतीय भाषाओं के ऐतिहासिक विकास को समझने में अत्यंत सहायक है।

Manuscript Info.

✓ **ISSN No:** 2584-184X
✓ **Received:** 13-10-2025
✓ **Accepted:** 26-11-2025
✓ **Published:** 30-12-2025
✓ **MRR:3(12):**2025;90-92
✓ **©2025, All Rights Reserved.**
✓ **Peer Review Process:** Yes
✓ **Plagiarism Checked:** Yes

How To Cite

डॉ रुचिका जैन. संस्कृत भाषा की संरचनात्मक विशेषताएँ: एक भाषावैज्ञानिक अध्ययन. Indian J Mod Res Rev. 2025;3(12):90-92.

मुख्य शब्द: संस्कृत भाषा, संरचनात्मक भाषाविज्ञान, ध्वनिविज्ञान, रूपविज्ञान, वाक्यविन्यास

प्रस्तावना

संस्कृत भाषा भारतीय भाषिक परंपरा की केन्द्रीय भाषा है, जिसने न केवल धार्मिक, दार्शनिक और साहित्यिक अभिव्यक्ति को आकार दिया, बल्कि एक सुव्यवस्थित भाषिक संरचना भी विकसित की। भाषाविज्ञान के दृष्टिकोण से संस्कृत एक पूर्ण विकसित भाषा है, जिसमें ध्वनि से लेकर वाक्य और अर्थ तक सभी स्तरों पर नियमबद्धता दृष्टिगोचर होती है (भट्ट, 2016)।

संस्कृत की संरचनात्मक विशेषताओं का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भाषा अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओं की जननी मानी जाती है। हिंदी, मराठी, गुजराती, बंगाली और ओड़िया जैसी भाषाओं की शब्दावली, धातु-प्रणाली और व्याकरणिक ढाँचे में संस्कृत का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है (शर्मा, 2019)।

भाषाविज्ञान के इतिहास में पाणिनि का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। उनका अष्टाध्यायी ग्रंथ न केवल संस्कृत का व्याकरण है, बल्कि यह संरचनात्मक भाषाविज्ञान का एक प्रारंभिक वैज्ञानिक प्रतिमान भी है। सूत्रात्मक शैली, अपवाद-नियम व्यवस्था और संक्षिप्तता इसे अद्वितीय बनाती है (कौल, 2015)।

संस्कृत की ध्वन्यात्मक संरचना अत्यंत वैज्ञानिक है। वर्णों का वर्गीकरण उच्चारण स्थान, प्रयत्न और घोष-अघोष के आधार पर किया गया है। यह वर्गीकरण आधुनिक ध्वनिविज्ञान के सिद्धांतों से पूर्णतः साम्य रखता है (मिश्र, 2020)।

रूपविज्ञान की दृष्टि से संस्कृत अत्यंत समृद्ध भाषा है। इसमें संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के रूप विभक्ति, लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार परिवर्तित होते हैं। यह रूपात्मक विविधता अर्थ की सूक्ष्मता को स्पष्ट करती है (तिवारी, 2018)।

संस्कृत की धातु-प्रणाली भाषा की जीवंतता का मूल आधार है। धातुओं से कृदंत और तद्धित प्रत्ययों द्वारा शब्द निर्माण की प्रक्रिया अत्यंत सुसंगठित है, जिससे भाषा की सृजनात्मक क्षमता बढ़ती है (शुक्ल, 2021)।

© 2025 डॉ रुचिका जैन. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

वाक्यविन्यास के स्तर पर संस्कृत की सबसे बड़ी विशेषता उसका अपेक्षाकृत स्वतंत्र शब्दक्रम है। विभक्ति चिह्नों के कारण कर्ता, कर्म और संबंध स्पष्ट रहते हैं, जिससे शब्दों के क्रम में परिवर्तन के बावजूद अर्थ सुरक्षित रहता है (शर्मा, 2019)।

संस्कृत में समास-प्रणाली वाक्यविन्यास और अर्थविज्ञान दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समास के माध्यम से जटिल विचारों को संक्षेप में व्यक्त किया जा सकता है, जो संस्कृत को दार्शनिक और शास्त्रीय अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त बनाता है (भट्ट, 2016)।

अर्थविज्ञान की दृष्टि से संस्कृत में शब्द और अर्थ का संबंध अत्यंत सूक्ष्म है। एक ही धातु से विभिन्न अर्थछायाओं वाले शब्दों का निर्माण संभव है, जिससे संदर्भ-आधारित अर्थनिर्धारण होता है (मिश्र, 2020)।

आधुनिक भाषाविज्ञान, विशेषकर संरचनावाद और जनरेटिव व्याकरण, संस्कृत की व्याकरणिक प्रणाली से प्रभावित रहा है। नोम चॉम्स्की जैसे भाषावैज्ञानिकों ने भी पाणिनीय व्याकरण की तार्किकता की सराहना की है (कौल, 2015)।

संगणकीय भाषाविज्ञान और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में भी संस्कृत की संरचना को अत्यंत उपयुक्त माना गया है, क्योंकि इसके नियम स्पष्ट और अपवाद न्यूनतम हैं (शुक्ल, 2021)।

इस प्रकार, संस्कृत भाषा की संरचनात्मक विशेषताओं का भाषावैज्ञानिक अध्ययन न केवल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि आधुनिक भाषिक अनुसंधान के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

शोध प्रश्न एवं परिकल्पना

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य संस्कृत भाषा की संरचनात्मक विशेषताओं को भाषावैज्ञानिक सिद्धांतों के आलोक में स्पष्ट करना है।

शोध के लिए द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है, जिनमें संस्कृत व्याकरण के प्राचीन ग्रंथ, आधुनिक भाषाविज्ञान से संबंधित हिंदी पुस्तकों, शोध-पत्रिकाओं और विश्वविद्यालय स्तर पर स्वीकृत पाठ्य-सामग्री को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन को चार प्रमुख भाषावैज्ञानिक स्तरों—ध्वनिविज्ञान, रूपविज्ञान, वाक्यविन्यास और अर्थविज्ञान—में विभाजित किया गया है। प्रत्येक स्तर पर संस्कृत भाषा की संरचना का स्वतंत्र और समन्वित विश्लेषण किया गया है।

पाणिनीय व्याकरण को सैद्धांतिक आधार बनाकर आधुनिक भाषावैज्ञानिक अवधारणाओं के संदर्भ में उसकी व्याख्या की गई है। इससे पारंपरिक और आधुनिक दृष्टियों के बीच समन्वय स्थापित हुआ है। तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से संस्कृत की संरचनात्मक विशेषताओं की तुलना आधुनिक भारतीय भाषाओं से की गई है, जिससे संस्कृत की विशिष्टता और प्रभाव को रेखांकित किया जा सके।

परिणाम

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि संस्कृत की ध्वन्यात्मक संरचना अत्यंत वैज्ञानिक और स्थिर है। वर्णों का व्यवस्थित वर्गीकरण शुद्ध उच्चारण और अर्थ-संरक्षण में सहायक है।

रूपविज्ञान के स्तर पर संस्कृत की शब्द-निर्माण क्षमता अत्यधिक पाई गई। प्रत्यय और धातु-प्रणाली भाषा को अभिव्यक्तिशील और लचीला बनाती है।

तालिका **1:** संस्कृत भाषा के संरचनात्मक स्तर

संरचनात्मक स्तर	प्रमुख विशेषता
ध्वनिविज्ञान	वैज्ञानिक वर्ण-वर्गीकरण
रूपविज्ञान	विभक्ति व प्रत्यय-समृद्धि
वाक्यविन्यास	स्वतंत्र शब्दक्रम
अर्थविज्ञान	सूक्ष्म अर्थनिर्धारण

वाक्यविन्यास संबंधी विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि संस्कृत की विभक्ति-प्रधान संरचना अर्थ की स्पष्टता बनाए रखती है।

तालिका **2:** संस्कृत और आधुनिक भाषाओं की संरचनात्मक तुलना

विशेषता	संस्कृत	आधुनिक भारतीय भाषाएँ
शब्दक्रम	अत्यंत स्वतंत्र	अपेक्षाकृत निश्चित
रूपात्मक विविधता	अत्यधिक	सीमित
अर्थ-सटीकता	उच्च	मध्यम

चर्चा एवं निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि संस्कृत भाषा की संरचनात्मक विशेषताएँ इसे एक पूर्ण विकसित और वैज्ञानिक भाषा बनाती हैं। ध्वन्यात्मक शुद्धता और रूपात्मक समृद्धि इसके प्रमुख आधार हैं।

संस्कृत की संरचना भारतीय भाषाओं के विकास को समझने में ऐतिहासिक और भाषावैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत सहायक है।

आधुनिक संगणकीय भाषाविज्ञान और कृत्रिम बुद्धिमत्ता में संस्कृत की संरचना की उपयोगिता निरंतर बढ़ रही है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि संस्कृत केवल एक शास्त्रीय भाषा नहीं, बल्कि एक ऐसा भाषिक मॉडल है जो आज भी भाषाविज्ञान के लिए प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

संदर्भ सूची

1. भट्ट के. संस्कृत और आधुनिक भाषाविज्ञान. वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन; 2016.

© 2025 डॉ रुचिका जैन. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

2. कौल आर. पाणिनीय व्याकरण का भाषावैज्ञानिक मूल्यांकन. दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 2015.
3. मिश्र एस. संस्कृत ध्वनिविज्ञान. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन; 2020.
4. शर्मा आर. भारतीय आर्य भाषाओं का इतिहास. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2019.
5. शुक्ल प. संस्कृत व्याकरण और संगणकीय भाषाविज्ञान. वाराणसी: चौखंबा विद्याभवन; 2021.
6. तिवारी भ. संस्कृत रूपविज्ञान. पटना: विद्यार्थी प्रकाशन; 2018.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 डॉ रुचिका जैन. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/